हेरा

गोदान

"होरी का चरित्र भारतीय किसान का वास्तविक चरित्र है।"

होरी को भारतीय कृषक जीवन का प्रतिनिधि पात्र इस रूप में माना जा सकता है कि भारत के लगभग सभी किसानों को उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो होरी के जीवन को निरन्तर संघर्षमय बनाये रही है और उसका अन्त भी वैसा ही हुआ है जैसा कि हमारे यहाँ साधारण किसान का होता चला आया है। डॉ० रामविलास शर्मा का मत है—" गोदान के किसी एक पात्र को प्रेमचंद का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता, लेकिन अगर मेहता से होरी को जोड़ा जा सकता तो जो व्यक्ति बनेगा वह बहुत कुछ प्रेमचंद से मिलता-जुलता होगा।

होरी पाँच बीघे खेत का मालिक भारत का एक साधारण किसान है। उसका बड़ा परिवार है। थोड़ी सी आय और बड़ा परिवार यह भारतीय किसान की जीवनव्यापी समस्या रही है। इस विषमता का यह परिणाम होता है कि हमारा किसान जी तोड़ मेहनत करते रहने पर भी दो जून भरपेट भोजन नहीं प्राप्त कर पाता और आय से अधिक होने वाले व्यय की पूर्ति के लिए उसे कर्ज का सहारा लेना पड़ता है और वह जब एक बार कर्ज को इन प्राणान्तक करने वाली भूल-भुलैया में फँस जाता है तो अन्त में दीवारों से टकरा-टकरा कर उसका वहीं अन्त हो जाता है वह उससे बाहर नहीं निकल पाता। होरी की सम्पूर्ण जीवन-गाथा कर्ज की इन्हीं प्राणघातक भूल-भुलैयों की को लेकर भरी सीमित परिधि में ही सिमट कर समाप्त हो जाती है।

P.T.O.

होरी रायसाहब जैसे धूर्त जमींदार का एक साधारण-सा किसान है। अन्य किसानों के समान वह भी परिश्रम करता तथा कर्ज लेता है, भाग्यवादी है, थोड़ी मर्यादा को बचाये रखना चाहता है। निश्छल ईमानदार और लोभ से बेईमान है। दीन: दुखियों को उसके यहाँ आश्रय मिलता है. अपनी गाय को जहर देने वाले भाई हीरा के भाग जाने पर सम्मान को अपना सम्मान समझ उसके घर की रक्षा करता है, जीवन में कभी इंधन भी मयस्सर न होने पर भी निर्भीकता पूर्वक भोला जैसे शक्तिशाली पुरुष को पछाड़ देता है, गाय झपटने के लिए भोला का झाँसा देता है, बाँस बेचते समय पाँच रुपये के लिए बेईमानी करने का प्रयत्न करता है. आदि किसान जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करता हुआ वह मोरे सम्मुख आता है उसके जीवन में अच्छाइयाँ और बुराइयों का स्वाभाविक सम्मिश्रण है। उसमें मानवीय अवगुण भी हैं और दैवी सद्गुण भी। एक शब्द में वह पूर्ण मानव है परन्तु यथाकथित महामानव नहीं। उसके जीवन की एक ही विशेषता है वह जीवनपर्यंत परिश्रम से मुँह नहीं मोड़ता। अपने पाँच बीघे खेत की रक्षा करने में वह अपने प्राणों की बाजी लगा देता है परन्तु अपनी जायदाद को हाथ से नहीं निकलने देता। इसी कारण गोदान उसके भारतीय परिश्रम की गाथा तथा किसान जीवन का महाकाव्य माना जाता है।

•) होरी एक अत्यंत साधारण सीधा-सादा-सा किसान है:—

उसका स्वभाव भोला और निश्छल है, छल-छन्दों से दूर रहता है। उसकी कथनी और करनी में प्राय: एकता रहती है परन्तु समय पड़ने पर अपने स्वल्प से स्वार्थ लाभ के लिए झूठ बोल लेना भी पाप नहीं समझता। मानव मात्र के प्रति उसके हृदय में महत्व और सहानुभूति है, गिरे हुए पर वह कभी ठोकर नहीं लगाता।

2) उसका जीवन तथा उसकी दृष्टि सीमित है — अपने घर, कुनबे और गाँव से बाहर उसकी दृष्टि नहीं जा पाती। इस सीमित क्षेत्र में परिश्रम करते हुए वह स्वार्थी बन गया है परन्तु ऐसा स्वार्थी नहीं जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का गला काट ले। उसके स्वार्थ की परिधि भी सीमित है।
वह भोला का विवाह करा देने की बात कहकर उससे गाय झटक लेता है परन्तु उसके मन में बेईमानी नहीं है, समय आने पर वह उसकी कीमत चुका देने की बात सोचता है। बाँस बेचने में भाई के साथ पाँच रुपयों की बेईमानी करता है परन्तु इस कृत्य से भी उसे ग्लानि होती है। रूपा के विवाह के बदले में वह वर-पक्ष से दो सौ रु० लेता है परन्तु उसे ऋण समझ कर ही लेता है और उसे लेते समय उसे अत्यंत मानसिक वेदना सहन करनी पड़ती है।
3) होरी व्यवहार कुशल है। — वह सहानुभूति तथा प्रशंसा के महत्व को पहचानता है और समय-समय पर उसका प्रयोग कर अपना काम निकाल लेता है। वह रायसाहब के यहाँ प्रायः इसलिए हाजिरी देने जाता रहता है, क्योंकि — "यह मिलने जुलने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है। नहीं, कहीं पता नहीं चलता कि किधर गए। गाँव में इतने आदमी तो हैं: किस पर बेदखली नहीं आई, किस पर कुड़की नहीं आई। जब दूसरों के पाँव तले अपनी गर्दन दबी है, तो उन पाँवों को सहलाने में ही कुशल है।" दुलारी सहुआइन से ठिठोली कर वह उसका हृदय कोमल बना देता है और उससे कर्ज प्राप्त कर लेने का वादा करा लेता है। इसी प्रकार नोहरी की आवभगत एवं प्रशंसा कर वह उससे रूपा के विवाह के लिए रुपया ले लेता है। होरी की यह व्यवहार कुशलता उसके जीवन को क्षण-भर के लिए झंझटों से उबार लेती है।
4) होरी एक साधारण हिन्दू गृहस्थ है। — अपने दरवाजे पर एक सुन्दर सी गाय बँधी देखने की उसकी साध जीवन की सबसे बड़ी साध बन गई है। गाय प्राप्त करने के लिए वह भोला

को झाँसा देता है। परन्तु वह गाय उसके सर्वनाश का कारण बन जाती है। होरी का अंत भी गोबर के बच्चों के लिए गाय पालने के प्रयत्न में जी तोड़ मेहनत करते हुए होता है परन्तु फिर भी उसे गोदान का पुण्य नहीं मिल पाता। उसके जीवन की यही विडम्बना और त्रासदी रही है।

5) होरी परिवार की मर्यादा का रक्षक है।:— उसका परिवार बड़ा है। सबकी मर्यादा की रक्षा करना वह अपना कर्तव्य समझता है। उसके भाई उससे अलग हो जाते हैं और उससे द्वेष रखने लगते हैं परन्तु दमड़ी बँसोड़ और हीरा की स्त्री पुनिया के झगड़े में वह दमड़ी बँसोड़ को लात जमाता है– उसी दमड़ी को जिससे उसने पाँच रुपये की बेईमानी करने के लिए कहा था। हीरा होरी की गाय को जहर देकर भाग जाता है। दारोगा जब हीरा के घर की तलाशी लेने की बात करता है तो होरी इसे अपना अपमान समझता है और रिश्वत देकर इस संकट को टाल देना चाहता है।

6) होरी पैतृक सम्पत्ति का रक्षक है,— जायदाद वाला है जायदाद को जीवन का सर्वस्व और आधार मानता है। जीवन से संघर्ष करता हुआ वह बड़ी जायदाद की- जो केवल पाँच बीघा खेत है- अन्त तक रक्षा करने का प्रयत्न करता रहता है। इस खेती से उसका गुजारा नहीं होता मगर वह मजदूरी करना अपमान समझता है। उसका कहना है कि –"खेती में जो मरजाद है; वह नौकरी में तो नहीं है।" मर्यादा की यही भावना उसे निरन्तर संकटों में उलझाती चली जाती है।

7) होरी बिरादरी को मान्यता देता है— जायदाद की मर्यादा, परिवार की मर्यादा आदि के उपरान्त वह बिरादरी की मर्यादा को भी निभाना चाहता है। बिरादरी का सबसे कठोर दण्ड किसी का हुक्का-पानी बन्द कर देना होता है। झुनिया के कारण होरी को भी यही दण्ड मिलता है। मर्यादा प्रिय होरी अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर अपना हुक्का-पानी खुलवा लेता है और स्वयं मजदूरी करने लगता है।

8) होरी धार्मिक विश्वास में पूर्ण आस्थावान है।— भारत का साधारणतः अनपढ़ एवं अशिक्षित होने के कारण वह समाज के कर्णधारों द्वारा प्रचारित धार्मिक विश्वासों में पूर्ण आस्था रखता है। भाग्यवाद और कर्मवाद में उसका अटिग विश्वास है। इसी विश्वास के अनुसार उसे दरिद्रता का यह अभिशाप पूर्व जन्म के किसी कर्म के कारण झेलना पड़ रहा है। ब्राह्मण उसके लिए पूज्य है चाहे वह ब्राह्मण दातादीन जैसा धूर्त क्यों न हो। होरी प्राचीन परम्परा और विश्वास को धर्म का सच्चा स्वरूप समझता है। कर्मवाद की वह प्रायः दुहाई देता रहता है। वह इसे भगवान की लीला समझकर उसकी आलोचना करने से घबड़ाता है।

9) होरी ईमानदार है— उसके कर्ज की लिखा-पढ़ी हुई है अथवा नहीं इस बात का होरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह दातादीन की पाई-पाई चुकाना चाहता है, गाय के बदले में भोला को अपने बैल खोल देने देता है; रूपा के विवाह में लिये गये दो-सौ की रकम को कर्ज मानकर स्वीकार करता है, बिरादरी के दण्ड को सिर आँखों पर चढ़ा खलिहान से ही सारा अनाज ढो-ढो कर पंचों के यहाँ पहुँचा देता है।

10) वह मानवता प्रेमी है— होरी का सबसे बड़ा गुण उसकी मानवता है। भयंकर संकटों का सामना करते हुए भी वह मानव मात्र के प्रति अपनी सहृदयता एवं सहानुभूति को नहीं छोड़ पाता। उसके भाई उसका विरोध करते हैं परन्तु वह सदैव उनकी सफलता हेतु हरसंभव मदद करता है। शोषण की चक्की में निरंतर पिसता हुआ भी वह अपनी मानवता को नहीं छोड़ता। सब उसका अनैतिकता से शोषण भी करते हैं और भूख एवं अत्यधिक निर्धनता से तंग आकर कभी-कभी उसे अनैतिक बनने के लिए भी मजबूर करते हैं, किन्तु उसकी मानवता सदैव धर्म विरोधी कार्यों का विरोध करती रहती है।

विषम परिस्थितियों के जाल में वह निरन्तर फँसता चला जाता है और अंत में इस जाल में तड़प-तड़प कर अपने प्राण भी गँवा देता है, लेकिन फिर भी वह मानवता से डिगा नहीं पाता। इसलिए होरी परिस्थितियों से हार कर भी मृत्यु को प्राप्त करके भी, विजय बना रहता है। मानवता के इन गुणों से विभूषित होने पर ही होरी एक आदर पात्र बन गया है।

iii) वह आर्थिक अभावों से ग्रस्त है— होरी का सम्पूर्ण जीवन आर्थिक प्रभाव की एक करुण कहानी है। वह अन्तिम समय तक परिश्रम करता है परन्तु उसके जीवन की कोई भी साध पूरी नहीं हो पाती। उसके अंग पर फटे कपड़े हैं, बच्चे नंगे-उघाड़े फिरते हैं। दूध-घी तो कौन कहे, उन्हें भरपेट अनाज भी खाने को नहीं मिलता। होरी सब की चोट सहता है, मिन्नतें-चिरौरी कर काम निकालता है। गालियाँ घुड़की आदि सहने का वह आदी हो चुका है। किसान से मजदूर बन जाता है परन्तु जीवन क्षेत्र के इस अपरिमित जोश को हम कभी भी निष्क्रिय अथवा हताश होते हुए नहीं देखते। वह निरन्तर परिस्थितियों से जूझता हुआ उन पर काबू पाने का प्रयत्न करता रहता है।

प्रेमचन्द उसकी मानसिक दशा का चित्रण करते हैं— जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थी। कौन कहता है, उसने जीवन संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण है। इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएँ हैं।

— 6 — 4 — 6 —